विचार बिन्दु

केवल आत्मज्ञान ही हृदयात्मा को सच्चा आनंद प्रदान करता है। –रामतीर्थ

बेहतर शिक्षा की व्यवस्था के लिए नागरिकों का सक्रिय होना जरूरी

शिक्षक दो प्रकार के होते हैं। एक खोटे शिक्षक और दूसरे खरे शिक्षक। खोटा शिक्षक एक आसान विषय को जटिल बना देता है और एक खरा शिक्षक कठिन विषय को भी सरल बना देता है। खरे शिक्षक को पढ़ाने में आनंद आता है, वह पढ़ा कर आनंदित होता है और उससे पढ़ने वाले छात्रों को भी आनंद आता है। वहीं खोटा शिक्षक खुद तो भ्रमित रहता ही है अपने छात्रों को भी भ्रमित करता है। इसीलिए कहा जाता है कि खरा शिक्षक खुद हमेशा एक छात्र बना रहता होता है। उसका नियमित कक्षा में उपस्थित होना उसकी स्थाई रूप से उसकी परीक्षा होनी होती है। एक छात्र तो परीक्षा देने तक ही अस्थायी तौर पर किसी कक्षा में रहता है, मगर शिक्षक की तो वहां स्थाई उपस्थिति होती है। एक खरे शिक्षक की कीमत का पता तब चलता है खोटे शिक्षकों को देखा जाता है। एक खोटे शिक्षक की कक्षा में जाकर आप किसी खरे शिक्षक की कक्षा में जाते हैं तब आपको दोनों के बीच का फर्क समझ में आता है। इससे उलट करके भी जाएं तो भी नतीजा यही मिलेगा। आज़ादी के बाद देश को बनाने का जज़्बा समय बीतने के साथ ज्यों ज्यों कम होता गया राजनीति सेवा के काम से च्युत होकर मेवा पाने का औजार बन गई। उसका असर देश के विकास की गति पर पड़ा, जिसमें शिक्षा का प्रबंधन और विकास भी शामिल था। चार दशक पहले शिक्षकों के तबादलों में दलीय राजनीति ने घुसपथ शुरू की वह आज सर्वव्यापी हो चली है। सरकारी शिक्षकों के तबादलों में विधानसभा सदस्यों की डिज़ायर आधारित व्यवस्था ने तो सभी कुछ मटियामेल कर देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। ऐसे हालात बन रहे हैं कि जब न तो शिक्षक को क्लास लेने में कोई रुचि रह गई है और न छात्रों को कक्षाएं अटेंड करने में कोई दिलचस्पी है। उच्च शिक्षा में तो यह नियम ही हो चला है। इस माहौल में खोटे शिक्षकों का बोलबाला होने लगे तो क्या आश्चर्य है। सच तो यह है कि वर्तमान स्कूली शिक्षा के शासन तंत्र में खरे अध्यापक का स्थान धीरे-धीरे संकुचित होता जा रहा है, उसकी हैसियत कमतर होती जा रही है। उसे शासक दल का कोई भी निर्वाचित प्रतिनिधि तंग कर सकता है। खोटा शिक्षक अपनी सुरक्षा के लिए चापलूस बन कर या अन्य जरियों से विभाग के तथा राजनीति के ऊंचे पहलवानों से पहचान बनाए रखता है। ऐसी हालत में निगाह घुमाएं तो हमें अनेक शिक्षक दलीय राजनीति के प्रपंच में पड़े भी नज़र आ जाते हैं। ऐसे शिक्षक अपनी कक्षा में विद्यार्थियों पर क्या असर डालते होंगे इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। शासन की सारी व्यवस्था उच्च अधिकारियों और राजनेताओं के मरजीदानों की पौ बारह करती है। यहां तक कि स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम निर्धारण भी यथास्थितिवादी मरजीदानों के भरोसे ही होता है। हमारे यहां की सरकारी व्यवस्था की एक विशेषता यह भी है कि उसमें पाठ्यक्रम निर्माण तथा पुस्तक चयन के काम को पढ़ाने के काम से पूरी तरह अलग करके रखा गया है। वर्षों तक एक विषय पढा चुकने के बाद भी कोई अध्यापक पाठ्यक्रम में संशोधन का सुझाव कारगर रूप से ऊपर वालों के सामने नहीं रख सकता। रखता है तो वह व्यंग्य या कोप का भाजन होता है। पाठ्यक्रमों में संशोधन के फैसले शासन में बैठे लोगों के मरजीदानों के समूहों के लिए सुरक्षित होते हैं। इन अनौपचारिक समूहों में कुछ नौकरशाह, कुछ शिक्षक और कुछ प्रशिक्षण संस्थाओं से सेवानिवृत्त लोग होते हैं। इन व्यवस्थाओं को बदलने का जिम्मा निर्वाचित राजनेताओं का है, जिन्हें यह सामाजिक दायित्व निभाना था। वे भटक गये तो व्यवस्थाएं भी भटक गई। राजनीति में लोग अब इस आस से आने लगे कि उनके हाथ में वैसी ही ताकत आ जाएगी जैसी देश में गणतांत्रिक संविधान के लागू होने से पहले राजाशाही में सामंतों के हाथ में हुआ करती थी। ऐसा माहौल 1980 के दशक में खुल कर शुरू हुआ और सुरसा की भांति बढ़ता ही चल गया। हमारी विडंबना यह भी है कि हम शिक्षा व्यवस्था में अध्यापन को एक बौद्धिक काम नहीं मानते बल्कि हमने उसे एक मशीनी कौशल मान लिया हैं जिस में एक बार सिद्धहस्त हो जाने के बाद कभी कुछ पढ़ने या सोचने की जरूरत नहीं रह जाती। ऐसे में हम अपने बच्चों की कल्पना शक्ति व प्रतिभा के विकास में अध्यापक के सहयोग की आशा कैसे कर सकते हैं!

रटा-रटा कर परीक्षाएं पास करवाने वाला शिक्षक खोटा ही कहा जाएगा। आज की दुनिया में बच्चों को जरूरत है पढ़ाए जा रहे विषय को गहराई से जानने की, समझने की। इसके अभाव में कागज की डिग्रियां तो विद्यार्थी के हाथ में आ जाती है मगर वह अर्थव्यवस्था में किसी महत्व का नहीं रहता।

आजादी बाद शुरू शुरू में शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए प्रयास जरूर हुए। संविधान लागू हो जाने के बाद पहला आयोग माध्यमिक शिक्षा में सुधार के तरीके सुझाने के लिए बनाया गया था। इस आयोग की रिपोर्ट को 'मुदलियार रिपोर्ट' के नाम से जाना जाता है। इसकी कुछ सिफारिशें अमल में आयीं और कई सिफ़ारिशें आज भी केवल प्रशिक्षण संस्थाओं में पढ़ाने के लिए रह गई हैं। आज यदि इस रिपोर्ट के नज़रिये से देखें तो पाते हैं कि माध्यमिक शिक्षा की परिस्थिति उतनी नहीं बदली जितनी आशाएं की गई थीं। पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण और परीक्षा व्यवस्था में कमज़ोरियों और जड़ताओं के अनेक कारण हैं। माध्यमिक शिक्षा किशोर से युवा होते बच्चों के लिये होती है। इस आयु में समाज और परिवार की माली हालत का सीधा प्रभाव बढ़ जाता है। जहां गरीब परिवारों के किशोरों पर काम धंधे में लगने का दबाव बढ़ जाता है वहीं समृद्ध परिवारों के बच्चों पर परीक्षा में ऊंचे अंक लाने के लिए दबाव पड़ता है। यह हालत देश में विषमता का भी परिचय देती है। देश में स्पष्टत: दो वर्ग बन गए हैं। जिन स्कूलों में गरीब बच्चे पढ़ते हैं उनकी तरफ ध्यान देने के लिए कोई तबका सरकार पर दबाव नहीं बनाता। स्कूलों और छात्रों का सामाजिक हैसियत के अनुसार बंटवारा होता है जिसे पाटने के लिए शिक्षा नीतियां कुछ भी नहीं कर पाती। हमारे देश में मौखिक परंपरा के चलते पाठ को रटना सदियों से शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी रहा है जिसे मोटे तौर पर अब भी अपनाया जा रहा है। हालांकि मौखिक परंपरा से ही हजारों वर्षों तक ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी आगे संप्रेषित हो सका है, मगर अब इसमें क्रांतिकारी सुधार अपेक्षित है जहां विद्यार्थियों में याद रखने पर जोर नहीं दिया जाकरउनमें जानकारी खोजने, उसे जांचने और रचनात्मक रूप से उसका उपयोग करने की क्षमता विकसित करने की जरूरत है। अब तक हमारी शिक्षा व्यवस्था में याद या सामान्य बोलचाल की भाषा में कहें रट्टा लगाने पर ध्यान केंद्रित होता रहा है जिसका उद्देश्य छात्र के सिर में अधिक से अधिक जानकारी को खपा देना होता है। रटा-रटा कर परीक्षाएं पास करवाने वाला शिक्षक खोटा ही कहा जाएगा। आज की दुनिया में बच्चों को जरूरत है पढ़ाए जा रहे विषय को गहराई से जानने की, समझने की। इसके अभाव में कागज की डिग्रियां तो विद्यार्थी के हाथ में आ जाती है मगर वह अर्थव्यवस्था में वह किसी महत्व का नहीं रहता।

पुरानी शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए, न केवल शिक्षकों को बल्कि अभिभावकों को भी बदलना होगा। कई माता-पिता को यह सहज लगता है कि उनके बच्चों को वैसे ही पढ़ाया जा रहा है जैसे वे खुद पढ़ते थे। उन्हें लगता है कि अगर बच्चे को निर्धारित सवालों के जवाब ठूंस-ठूंस कर याद नहीं कराए गये तो वे अच्छी शिक्षा और सामान्य ज्ञान से वंचित रह जाएंगे जो उन्हें नुकसान पहुंचाएगा। उन्हें यह समझाने की जरूरत है कि ऐसा बिल्कुल नहीं है, बल्कि इससे बिल्कुल विपरीत है। जिस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी का तेजी से विस्तार हो रहा है उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि भविष्य में छात्रों को विषयों से संबंधित जानकारी के संदर्भों की बेहतर समझ पैदा करने की जरूरत होगी। उनके लिये यह जानना भी आवश्यक है कि उन्हें जरूरी जानकारी कहां से प्राप्त करनी है और इसका उपयोग कैसे करना है। यहां खरे शिक्षक की भूमिका रेखांकित होती है जो नए तकनीकी दौर में अपने विद्यार्थियों को सिखाते हुए खुद भी सीखने को हर पल तत्पर रहे। स्कूलों में खास कर प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में संचार, आपसी संबंध, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, और व्यक्तिगत विकास - ये सभी विषय हैं जिन्हें प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाया जाना अपेक्षित हो गया है मगर वे सभी मौजूद स्कूली पढ़ाई में कमोबेश अनुपस्थित हैं। इस नई जरूरत के लिए न केवल एक संतुलित पाठ्यक्रम की दरकार होगी बल्कि इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि शिक्षक इसे कितनी अच्छी तरह कार्यान्वित कर पाते है। इसके लिए हमें शासन को बाध्य करना होगा कि वह खरे शिक्षक चुने और उन्हें समर्थन दे। लोकतंत्र में शासन को बाध्य करने का काम नागरिक अपने मताधिकार के जरिए कर सकते हैं। यहां नागरिकों को जगाने का काम संजीदा मीडियाकर्मी कर सकते हैं। राजनेता यह कह कर अपना पल्ला नहीं झाड़ सकते कि हमने शिक्षा के अधिकार का कानून बना दिया है और हमारा कर्तव्य पूरा हो गया है। नागरिकों को उनके सामने खड़े होकर यह पूछना होगा कि क्या इस कानून के बाद शिक्षा पाने की एक न्यायपूर्ण व्यवस्था हो पाई है? क्या सबको शिक्षा के समान अवसर मिल गये हैं? क्या सबको गुणवत्ता वाली शिक्षा दिला पाने का दायित्व शासन निभा पाया है? नागरिकों को समझना होगा कि उन्होंने बहुत समय गंवा दिया। अब समय आ गया है कि हर बालक, हर युवा को अच्छी शिक्षा देना सुनिश्चित करने के लिए लोकतान्त्रिक तरीकों से शासन को बाध्य किया जाय।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं समीक्षक)

झाड़ू की ऊंची उड़ान : धरती से प्रिंट और सोशल मीडिया तक

प्रो. डॉ. वीर बहादुर सिंह

शब्द झाड़ू पढ़ कर चौंकिए मत, इसमें कुछ भी अप्रत्याशित नहीं, केवल हम इसके महत्व से अभी तक अनिभिज्ञ रहे हैं किसी अन्य ग्रंथ में झाड़ू की प्राचीनता के प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। वेद, उपवेद, आदि। प्राचीन काल से ही झाड़ू मानव घरों में उपयोग में ली जाती रही है।

छोटी से छोटी चीज पर भी मानव का ध्यान आकर्षित हुआ है और उन पर फिर काफी खोजबीन और सन्दर्भ लिखे गए। तो यह कुछ अटपटा सा लगता है कि झाड़ू पर कोई अनुसन्धान, पुस्तक, लेख या वार्ता, नाटक या अन्य कोई सन्दर्भ न लिखा गया हो? अभी एक सप्ताह भी नहीं हुआ एक पूरा हिंदी दैनिक अखबार का पन्ना और वह भी प्रथम कवर पेज जिसे अखबारी दुनियां में शीथ कहते हैं, पर झाड़ू का विस्तृत विज्ञापन छपा था उसे देख कर मेरा माथा ठनका क्योंकि जीवन में झाड़ू पर मैंने पहला विज्ञापन देखा। कोतूहल, जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वावाभिक थी, विज्ञापन चूँकि ओसवाल सोप ग्रुप कंपनी का था, एक पूरे पेज के विज्ञापन का अर्थ लाखों रुपये का खर्च और वो भी झाड़ू पर, मन ने सोचा–झाड़ू का कुछ तो महत्व है, पर झाड़ू जैसे अभी तक उपेक्षित घरेलू उपकरण को अपना वांछित स्थान मिला क्यों नहीं? इतना ही नहीं अब तो वही विज्ञापन सोशल मीडिया पर यू ट्यूब बना कर डाल दिया गया है। अत: निश्चित ही अब पूरे देश के हिंदी भाषिओं और विदेशों में बसे हिंदी भाषी भारतीय भी यू ट्यूब को देख झाड़ू के बारे में ज्ञान अर्जित कर सकेंगे और इस प्रकार झाड़ू अपेक्षाकृत बहुत कम समय में अपनी विशेषताओं से विश्व को अवगत करा सकेगी। जब बिना कुछ योगदान के इस देश में पदम पुरस्कार और भारतरत्न दे दिए जाते हैं तो इस वार झाड़ू को कम से कम सम्पादकीय लेख के लिए ही विषय चुन क्यों न सम्मानित कर दिया जाय??

मेरे मन में आया झाड़ू जैसा महत्वपूर्ण प्रतिदिन काम आने वाला घरेलू देसी उपकरण का विवरण हिंदी पाठकों के पढ़ने के लिए कुछ रोचक सामग्री के साथ परोसा जाय तो झाड़ू के प्रति अभी तक उपेक्षित व्यवहार की कुछ भरपाई तो हो ही जायेगी, और झाड़ूभी अपने को धन्य समझेगी, कि चलो किसी मानव लेखक ने उसके बारे में कुछ तो सोचा और मेरे सभी पक्ष समेटे । मेरे प्रति एक लेख राजस्थान के सबसे पुराने एवं हिंदी जगत के पाठकों द्वारा पढ़े जाने वाले दैनिक अखबार राष्ट्रदूत; में सम्पादकीय लेख लिख दिया।

मैं दावे से कह सकता हूँ कि अंग्रेजी के किसी मशहूर उपन्यासकार, शेक्सपियर, कीट्स, ऑथेलो लोंगफैलो आदि ने भी कभी झाड़ू के बारे में सोचा नहीं होगा। लेखक का दृष्टिकोण अलग है वह इस लेख में मनोरंजन की दृष्टि से झाड़ू का विवरण नहीं लिख रहा बल्कि झाड़ू के महत्व को देखते हुए उसके विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करने का प्रयास कर रहा है।

ओसवाल सोप कंपनी के एक विज्ञापन ने मेरे निष्क्रिय मन में भी झाड़ू के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर दी। फलस्वरूप अन्य विषयों को छोड़ मैं झाड़ू को प्राथमिकता दे उस पर लेख लिखने बैठ गया, जो आप पढ़ रहे हैं। घर में साफ़-सफाई करने के लिए हर घर में झाड़ू-पोंछा का उपयोग किया जाता है। प्रतिदिन झाड़ू-पोंछा से सफाई करने पर घर में सुख समृद्धि आती है। झाड़ू लगाने के कुछ नियम भी हैं–जैसे किसी व्यक्ति के घर से बाहर जाने पर तुरंत घर द्वार पर झाड़ू नहीं लगाई जाती। झाड़ू का काम समाप्त होने पर उसे घर में ऐसे स्थान पर लिटा कर रखा जाता है जहाँ किसी का पैर उस पर न पड़े कभी भी झाड़ू को दीवार के सहारे खड़ी रखने का नियम नहीं है, झाड़ू पर कभी पैर नहीं रखना चाहिए।

अनायास धोखे से यदि झाड़ू पर पैर लग जाय तो तुरंत ही हाथ जोड़कर क्षमा मांग लेनी चाहिए।

झाड़ू की कई किस्मे हैं–जैसे फूल झाड़ू, बांस की झाड़ू, सींक की झाड़ू, नारियल या खजूर के पत्तों की झाड़ू, मोर के पंखों की झाड़ू आदि। मोर पंख की झाड़ू कांच में फ्रेम किये फोटो, कैलेंडर या दीवार पर टंगे अन्य वस्तुओं की धूल जाला की सफाई के लिये काम में लिया जाता है। आजकल झाड़ू बनाने के लिए कुछ अन्य पेड़-पौधों को भी उपयोग में लिया जाता है जैसे–पीली सरसों के फसल काटने के उपरांत पेड़, अरहर दाल के पेड़ जिनकी झाड़ू को ऊबड़खाबड़ सख्त जमीन से मोटा-मोटा कूड़ा बुहारने के लिए किया जाता है। इसे गांव में खराड़ा कहा जाता है। मोटा कूड़ा एकत्रित करने के कारण झाड़ू को बुहारी भी कहा जाता है।

आजकल फूल झाड़ू और तार की झाड़ू मशीनों से बनने लगी हैं। बहुत ही तुच्छ लगने वाली चीज का देश में हजारों करोड़ का व्यवसाय है। राजस्थान का पाली जिला झाड़ू के उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। वही ग्रामीण भारत के गरीब जंगलों से कच्चा माल एकत्रित कर घरेलू उद्योग की तरह झाड़ू बनाकर शहरों में सस्ती बेच देते हैं।

राजस्थान के पाली जिले में सड़क बुहारने के लिए लम्बी बांस की झाड़ू बनती हैं। झाड़ू के आगे के बारीक हिस्से को ब्रूम कहते हैं और इस ब्रूम को बारीक बड़े यंत्रों से बनाया जाता है।

घरों में झाड़ू को लक्ष्मी का दर्जा प्राप्त है। दीपावली उत्सव के अगले दिन घरों की महिलायें भोर में ही झाड़ू और थाली बजाकर घर के सभी कमरों में 39 भाग दलुद्दर (गंदगी) आई लक्ष्मी; कह कर यह आव्हान करती हैं कि घर से सब तरह की गंदगी दूर हो अर्थात दरिद्रता भाग लक्ष्मी (सम्पन्नता) को जगह खाली कर। कितना उच्च भाव है?

राजनीति में भी अभी कुछ वर्ष पूर्व ही झाड़ू का पदार्पण हुआ है और उसका जन्म समाजसेवी अन्नाहजारे के भ्रष्टाचार विरोधी एवं लोकपाल कानून की मांग से उपजे आम आदमी पार्टी ने झाड़ू को अपना प्रतीक घोषित कर दिया, उस समय मेरी प्रसन्नता का कोई ठिकाना हीं था। उस समय मेने सोचा था कि यह अस्त्र देश से सभी भ्रष्टाचार रुपी कचड़े को झाड़ू लगा देगा। तब यह आशाजनक लगा भी था क्योंकि झाड़ू तब धरती से उठ कर पार्टी के झंडे पर शोभायमान हो गई थी।

तदुपरांत झाड़ू के प्रतीक पर एक चुनाव देहली में लड़ा गया और पार्टी को उसमे विजय हासिल हुई। उस समय यह आशा जगी थी कि देश में अनेक स्तरों पर फैले व्यापक भ्रष्टाचार को यह पार्टी झाड़ू लगा कर देश निकाला दे देगी। फलस्वरूप दिल्ली में आप पार्टी का गठन बड़े उत्साह और जोरशोर से हुआ और फिर पंजाब प्रदेश में भी पार्टी ने कुछ उपस्तिथि दर्ज कर ली लेकिन जल्दी ही लोगों का भ्रम टूट गया क्योंकि जो पार्टी भ्रष्टाचार के मुद्दे पर दिल्ली में सत्ता में आई वही भ्रष्टाचार में आकंठ डूबती नजर आने लगी।

प्रजा को लुभाने और भ्रष्ट बनाने के हथकंडों को अपनाते हुए अनेक वित्तीय बिल मॉफ कर दिए गए और भविष्य में कुछ के लिए आश्वासन भी दे डाला। वित्तीय लाभ लेने वालों ने ये सोचा ही नहीं कि आखिर बिजली उत्पादन के लिए बजट कहाँ से आएगा? इसलिए बिजली उत्पादन को प्राइवेट करना अब समय की आवश्यकता होती जा रही है अन्यथा अन्य प्रदेश भी फ्री बिजली देकर अपना वोट बैंक मजबूत कर सकते हैं।

केंद्र सरकार भी देहली प्रान्त को समाप्त कर नेशनल कैपिटल में शामिल कर केन्द्रीय प्रशासन वहां लगा सकती है? जिससे दिल्ली की जनता मुफ्तखोरी की आदत से वापिस आम जनता में शामिल हो सके। देहली की जनता का देश की बाकी जनता से अब कोई सरोकार नहीं रह गया है। वह तो मुफ्त की रेवड़ी से गुलछर्रे उड़ा रही है और बाकी जनता टेक्स के भार से पिस कर त्राहि-त्राहि कर रही है जिसके कारण विपक्षी पार्टियाँ मंहगाई के मुद्दे पर सामूहिक रूप से मोदी को विस्थापित करने की देशव्यापी जनता जागरण यात्रा निकालने की योजना पर तैयारी कर रही हैं। झाड़ू के विषय पर वापिस लौटते हुए मेरा कहना है कि झाड़ू का चिन्ह अपना कर बाद में ही पार्टी ने झाड़ू के प्रति जो गंभीर अपराध किया है वह अक्षम्य है। एक बार प्याज की ऊंची कीमतों के कारण केंद्र सरकार गिर गयी थी यहाँ भी पवित्र लक्ष्मी स्वरूपा यथा झाड़ू के अपमान को भी देश की जनता धो डाले कोई आश्चर्य नहीं? जिससे झाड़ू के प्रति घोर अपमान की निंदा प्रमाणित हो सकेगी और सम्बंधित राजनैतिक पार्टी देश से नेष्तनाबूद हो अपने घर बैठेगी, और मुफ्तखोरों को एक सीख भी मिल जाएगी।

अत: उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि जिस घर, समाज, गांव, देश और राजनीति में झाड़ू का सम्मान होता है वहां स्वच्छता, सम्पन्नता और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

प्रो. डॉ. वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं डेरी व खाद्य विज्ञ एमपीयूएटी , उदयपुर

जीवन में पहली बार आवाज सुनने पर बच्ची मुस्कुराई

एडीएम व एसडीएम ने कान की निःशुल्क जांच की व्यवस्था की व सुनने की मशीन वितरित की

नागौर, (निस)। श्री देव जसनाथ ट्रस्ट एवं श्री जसनाथ आसन पांचलासिद्धा में अली यावर जंग राष्ट्रीय वाक एवं श्रवण दिव्यांग जन संस्थान, दिव्यांगजन सशक्तिकरण सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार एवं श्री देव जसनाथ ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में नि:शुल्क कान की जांच एवं सुनने की मशीन वितरण शिविर का बुधवार को शुभारम्भ हुआ।

इस अवसर पर मोहनलाल खटनावलिया अतिरिक्त जिला कलक्टर, नागौर, हनुमानराम चौधरी, उपखण्ड अधिकारी, खीवंसर, डॉ. गोपाल शर्मा प्रोठाम इंचार्ज, महन्त योगेश्वर सुरजनाथ सिद्ध अध्यक्ष श्री देव जसनाथ ट्रस्ट पांचला सिद्धा, कंवराराम जांणी प्रवर्तन अधिकारी, रसद विभाग, नागौर, राजेन्द्रसिंह सरंपच ठाम पंचायत पांचला सिद्धा तथा

- **सरकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंद तक पहुचांने का किया आव्हान**

गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि अतिरिक्त जिला कलक्टर मोहन लाल खटनावलिया ने अपने उद्धबोधन में दिव्यांगजनों की योजना पालनहार योजना, पेंशन योजना, चिरंजीवी योजना के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी देते हुए सभी ग्रामवासियों से आहवान किया कि विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंद तक पहुचांने में वे आमजन को जागरूक करे एवं उन तक लाभ पहुंचाने मे अपना सहयोग प्रदान करें। साथ ही श्री जसनाथ ट्रस्ट के बालिका शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण सरंक्षण, नशा मुक्ति अभियान, वंचित छात्रों को शिक्षा से जोड़ने आदि सामाजिक सर्वोकार के कार्यों की सराहना करते हुए ट्रस्ट को लगातार ऐसे कार्य करने की प्रेरणा दी।

उपखण्ड अधिकारी खीवंसर ने आसन की पवित्रता तथा आध्यात्मिक शांति के अपने अनुभव को साझा किया। उन्होनें कहा कि दिव्यांगजनों से संबंधित समस्याओं को विज्ञान एवं तकनिकी सहयोग से कुछ हद तक दूर किया जा सकता है। शिविर के शुभारम्भ में पहली श्रवण मशीन अतिरिक्त जिला कलक्टर, उपखण्ड अधिकारी, चिकित्सा अधिकारी एवं सुरजनाथजी सिद्ध महन्त जसनाथ आसन, पांचलासिद्धा ने पूजा पुत्री लुम्बाराम को दी गई। मशीन लगाने पर पूजा ने पहली बार जब आवाज सुनी तो अपनी खुशी के साथ मुस्कराते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति की।

सांभर के दरबार स्कूल में 37 में से 14 पद खाली

सांभरझील, (निसं)। ब्लॉक मुख्यालय पर सांभर की राजकीय दरबार उच्च माध्यमिक इंग्लिश मीडियम स्कूल में लम्बे समय से कक्षा पहली से बारहवीं तक में अध्ययनरत छात्र छात्राओं को अनेक विषयों के शिक्षकों के रिक्त पड़े पदों के कारण नियमित पढाई से तो हाथ धोना ही पड़ रहा है। प्रदेश सरकार की ओर से इंग्लिश मीडियम स्कूल में तब्दील करने के बाद दोगुनी गति से अभिभावकों का रूझान भी बढा और बेतहाशा नामांकन वृद्धि भी हुयी। वही भामाशाहों की ओर से हर प्रकार से दिये गये योगदान के बाद जिस गति से स्कूल का भौतिक विकास देखने को मिला उस हिसाब से यदि सरकार रिक्त पड़े शिक्षकों व मंत्रालयिक वर्ग के पदों को भरने की दिशा में कोई ठोस कदम उठाती है तो इसके और अधिक अनुकूल सार्थक परिणाम देखने को मिल सकते है।

स्कूल में 754 विद्यार्थी है जिनमें से 481 छात्र व 273 छात्राएं है। वर्तमान में यहां पर इतिहास, हिन्दी, जीव विज्ञान, अंग्रेजी के कुल 4 व्याख्याता नहीं है। वरिष्ठ अध्यापक के तौर पर 1 शारीरिक शिक्षक भी नहीं है। 3 ऐसे विशेष शिक्षकों के पद खाली है जिनकों क्षेत्र की आस-पास की सरकारी स्कूल में जाकर मूक-बधिर बच्चों को टेकल करके उनको पढ ाई के लिये शारीरिक भाषा के जरिये समझाकर भविष्य संवारना, लेकिन इनका भी नहीं होना एक पीड़ादायक ही है। कक्षा पहली से पांचवीं तक पढ़ ाने वाले 3 अध्यापकों एवं कक्षा छठी से आठवी तक के बच्चों को गणित का 1 टीचर उपलब्ध नहीं है। पुस्तकलाध्यक्ष के पद पर काम करने वाले 1 थर्ड ग्रेड टीचर का टोटा होने से पुस्तकालय में हजारों की संख्या में ज्ञानार्जन की पुस्तकें ताले में बंद धूल फांक रही है। प्रयोगशाला सहायक के खाली पड़े एक पद के कारण यहां के शिक्षकों से अधिक विद्यार्थियों को अपने भविष्य की चिंता सता रही है।

1 वरिष्ठ लिपिक नहीं होने से भी परेशानी झेलनी पड़ रही है। सहायक कर्मचारी के 2 व 1 जमादार के पद खाली पड़े है, लिहाजा स्टाफ अपने स्तर से ही मैनेज करके काम चला रहा है। यद्यिप इस संदर्भ में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विद्याधर सिंह चौधरी ने समय समय पर शिक्षा मंत्री से क्षेत्र की सरकारी स्कूलों में रिक्त पदों को भरवाने की दिशा में ध्यान भी आकृष्ट करवाया जा चुका है।

फ़िल्म ''गौभक्त धन्ना जाट'' के शो की आमदनी गायों को दी

कोलसिया, (निसं)। श्री श्याम सरकार एवं श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ समिति के तत्वावधान में राजस्थानी फिल्म गौभक्त धन्ना जाट का विशेष शो गौवंश की सहायतार्थ काशीनाथ घाणेकर नाट्यय गृह ठाणे में किया गया। मुख्य अतिथि श्वेता शालिनी, फ़िल्म निर्माता हरिप्रकाश नहेरिया व फ़िल्म अभिनेता सन्नी अग्रवाल थे।

इस समय गौधन को बचाने के लिए प्रदेश में मारवाड़ी समाज आगे आया है। मशहूर समाजसेविका एवं वूमंस राइट्स एक्टिविस्ट डॉ. सुमन अग्रवाल ने बताया कि इस फ़िल्म को देखने हजारों की संख्या में शरीक होकर दर्शकों ने गौवंशों के प्रति सरक्षण के लिए जागृत होने का प्रमाण दिया।

सुमन अग्रवाल ने सभी गौभक्तों व फ़िल्म अभिनेता सन्नी अग्रवाल की तारीफ की। इस मौके पर अग्रवाल ने कहा कि इस फ़िल्म से जो भी आमदनी आएगी। वह गौमाता को समर्पित किया जाएगा। जिन्होंने भी फ़िल्म धन्ना जाट देखी। उन्होंने सन्नी के अभिनय की प्रशंसा की।

इनका मानना है कि अग्रवाल ने समाज को धार्मिक व सामाजिक फिल्में देकर युवा पीढ़ी को अपनी भाषा व संस्कारों को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। फिल्म निर्माता हरिप्रकाश नहेरिया का स्वागत संस्था के संयोजक सुशील गाडिया, पवन शर्मा व पूरी टीम ने किया। फिल्म अभिनेता सन्नी अग्रवाल ने संस्था को धन्यवाद देते हुए राजस्थानी समाज से अपील की है कि जो भी भामाशाह व समाजसेवी इस फ़िल्म का शो करवाना चाहते है तो इनसे संपर्क कर सकते हैं।

राजस्थानी फिल्म गौभक्त धन्ना जाट का विशेष शो गौवंश की सहायतार्थ काशीनाथ घाणेकर नाट्य गृह ठाणे में किया गया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 15 सितम्बर, 2022

आश्विनी मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, भरणी नक्षत्र प्रात: 8:05 तक, हर्षण योग शुक्रवार प्रात: 5:27 तक, तैतिल करण दिन 11:01 तक, चन्द्रमा दिन 2:29 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज ज्वालामुखी योग प्रात: 8:05 तक है। यमघट योग प्रात: 8:05 से सूर्योदय तक है। आज षष्ठि और कृत्तिका का श्राद्ध है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:47 तक, चर 10:51 से 12:22 तक, लाभ-अमृत 12:22 से 3:25 तक, शुभ 4:57 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:16, सूर्यास्त 6:28

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात मन:स्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों को दिन के मध्यान्ह पूर्व में प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्